Shodh Sangam Patrika
E-ISSN: 3049-0707, Volume 2 | Issue 3 | (July – Sep 2025)

बस्तर के जनजातीय लोककथाओं में ऐतिहासिकता

गावस्कर कौशिक
सहायक प्राध्यापक (हिन्दी)
स्व. श्री देवी प्रसाद जी चौबे शासकीय महाविद्यालय, गंडई, छत्तीसगढ़

शोधसार

इतिहास के पुनर्निर्माण में ऐतिहासिक स्रोत के रूप में लोककथाओं का बहुत अधिक महत्व होता है। बस्तर की आदिवासी लोककथाएँ बस्तर के इतिहास और वहाँ की जनजाति संस्कृति को समझने के लिए महत्वपूर्ण स्रोत हैं। लोककथाएं अपने अन्तस् में अतीत की घटनाओं, परम्पराओं, लोकविश्वास, रीति रिवाज और सामाजिक संरचनाओं को समेटे हुए होते है। जनजातीय लोक कथाओं में उनकी धार्मिक विश्वास, मान्यताओं, देवी-देवताओं, और अनुष्ठानों के बारे में विशद जानकारी निहित होती हैं, जो उनके आध्यात्मिक जीवन का अभिन्न अंग हैं। लोक या मिथ कथाएँ पूरी तरह सत्य नहीं होती है, किंतु वे सत्यता के बहुत निकट जरुर होते हैं। कई बार सत्य घटनाओ में रूपक एवम कल्पना के सहारे लोककथा गढ़ दी जाती है, जो पीढी दर पीढ़ी व्यापक स्तर में फैल जाती है। जनजातीय लोककथाओं का अध्ययन ऐतिहासिक स्रोत के रूप में कर उनके विश्लेषण से काल के गर्भ में छुपी इतिहास तक पहुंचने का प्रयास किया सकता है।

मुख्य शब्द: बस्तर, लोककथाएं, आदिवासी, मावली, दन्तेश्वरी, ऐतिहासिक स्रोत, लोकविश्वास

प्रस्तावना:

भारत के 26वें राज्य छत्तीसगढ़ न केवल धान के कटोरा के रूप में विख्यात है अपितु यहाँ के जनजातीय लोकसंस्कृति, शिल्पकला और लोकसाहित्य भी विश्वविख्यात हैं। छतीसगढ़ राज्य जनजातीय बाहुल्य राज्य हैं यहाँ 42 प्रकार की जनजातियाँ निवासरत हैं जिनका अपना समृद्ध सांस्कृतिक इतिहास रहा है जो इनके लोकसाहित्य में संरक्षित है। बस्तर की आदिवासी लोक कथाएँ वाचिक परम्परा में पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित होते आ रही है। इन लोक कथाओ में प्रकृति, पशु पक्षी, देवी देवता, लोकजीवन, लोकमान्यताएं, लोक विश्वास एवं आदिवासी जीवन शैली के विभिन्न पहलुओं के दर्शन होते है। इन लोककथाओं में जनजातीय जीवन, रीति-रिवाज, लोक अनुभव, लोक आस्था, विश्वास और ऐतिहासिक घटनाओं का वर्णन होता है। आदिवासी लोककथाएँ न केवल मनोरंजन के साधन है अपितु ज्ञानपरंपरा का एक महत्वपूर्ण पहलू भी है जो आदिवासी समुदायों के जीवन दर्शन, संस्कृति, ज्ञान, नैतिकता और सामाजिक मूल्यों को पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

लोककथाएं जनजातीय समुदाय को अपने लोकविश्वास, आस्था, संस्कृति, परम्परा, जीवन मूल्य, लोकज्ञान एवं इतिहास को संजोए रखने और सहजीवता एवम सामूहिकता के साथ खुशहाल जीवन जीने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। आदिवासी लोककथाएँ इतिहास और संस्कृति को समझने के लिए महत्वपूर्ण स्रोत हैं। इन लोककथाओं के माध्यम से आदिवासी समुदायों के सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक जीवन तथा आदिवासी दर्शन को समझा का सकता हैं।

लोक साहित्य का महत्व

लोक साहित्य जहाँ एक ओर लोकजीवन के रहन-सहन, आचार-विचार कथाएँ, पूजा-पाठ, धार्मिक आस्था, पर्व त्योहार और परम्पराओं का प्रतिबिंब है, वहीं दूसरी ओर लोक साहित्य का सम्बन्ध दर्शन, इतिहास और समाज से

भी होता है। डॉ अनसूईया अग्रवाल लोक साहित्य के महत्व को रेखांकित करते हुए कहती है- "आज उत्तर आधुनिकता के लगातार बढ़ते हुए दबाव के कारण अधिसंख्या अपनी सभ्यता और संस्कृति से कटकर पश्चिमी मूल्यों को अपनाकर गौरवान्वित हो रहे हैं जिससे लोक संस्कृति न केवल उपेक्षित हो रही है अपितु पूंजीवाद की गिरफ्त में सिसक भी रही हैं तथापि लोक साहित्य वेत्ताओं के द्वारा लोकबीज भूमि को बचाने का जो पुरजोर प्रयास चल रहा है उसके सामने निश्चित ही लोक अपनी जड़ से कभी कट नहीं सकेगा क्योंकि ना तो धूल उड़ाने से सूर्य की किरणें मैली होती है और ना ही सूर्य पर थूकने से सूर्य का कभी छींटे ही पड़ते हैं। हमारी संस्कृति गतिशील है इसलिए ईश्वर रूपा है और ईश्वर रूपा है इसलिए वंदनी है।"[1] जनजातीय लोकसाहित्य वास्तव में उनके लोकजीवन के अनुभवों का संचित कोश है जो नए नए स्वरूप ग्रहण करते हुए पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित होती है। डॉ अनुसुइया अग्रवाल लिखती है- "लोक साहित्य मानव हृदय के यथार्थ चित्र का दर्पण है जिंदगी की सच्चाई इसकी सबसे बड़ी ताकत है। यह लोक आधारित ज्ञान से गतिमान होता है, नए-नए अनुभवों को एकत्रित कर संपन्न होता है। यह अतीत का अवशेष है तो वर्तमान का जीवित अभिलेख भी। शास्त्रीय तर्क वितर्क से पूर्णतः मुक्त लोकसाहित्य में मानवीय संबंधों का रूपांकन बड़ी सजगता से होता है।"[2] जनजातीय समुदाय सहज व सामुहिक जीवन व्यतीत करता है, वे अपने हर अनुभव जनित ज्ञान को, जीवन मूल्यों को धार्मिक आस्था से जोड़कर अपने लोकसाहित्य में संरक्षित रखती है। डॉ अनुसुइया अग्रवाल, श्रीमती आर्चर का संदर्भ देती है – "लोककथाएं जाति ज्ञान को सुरक्षित रखती हैं तथा जातीय रीति रिवाज को व्यवहार योग्य ठहराती है। वे स्तर और मूल्य को निर्धारित करती हैं और आत्मविश्वास भरती हैं। लोक कथाएं शक्ति का भंडार हैं जिनसे की जातीय जीवन सशक्त रहता है।"[3] वास्तव में लोक में प्रचलित परम्परा, लोकविश्वास और लोक संस्कृति उनके लोक साहित्य में ही संरक्षित रहती है।

लोक साहित्य और इतिहास का सम्बंध:

लोक साहित्य और इतिहास का गहरा संबंध है इतिहासविदों को लोकगीतों, लोक कथाओं से अधिक पुष्ट साक्ष्य और प्रमाण कुछ अन्य नहीं मिल सकता। इतिहास और लोक साहित्य के संबंध को स्पष्ट करते हुए डॉक्टर शंकर लाल यादव के हवाले से डॉ अनुसुइया अग्रवाल कहती है- "किसी भी जनपद के इतिहास के विषय में कुछ तथ्य संजय रहते हैं और जब तक पुरातत्वविद द्वारा कुछ खोज न की जाए तब तक इतिहास की कड़ियाँ जोड़ने का कार्य लोक साहित्य से ही लिया जाता है।"[4] लोककथाओं में निहित युगीन परिदृश्य अन्वेषणकर्ताओं के लिए एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक स्रोत होते है। इनमें प्रतिबिंबित ऐतिहासिक तत्वों के बीज इनके बनने और लोक में प्रचलित होने प्रमाण स्वयं देते है। लोककथाओं में ऐतिहासिकता के संदर्भ में डॉ मृणाल ओझा, डॉ धनंजय के उद्गार को रेखांकित करती है- "हमारे वेदों, पुराणों आदि में इतिहास की पर्याप्त सामग्री विद्यमान है। आवश्यकता इस बात की है विद्वान निष्पक्ष होकर अनुसंधान करें। प्राचीन साहित्य में इतिहास के साथ पुराण शब्द का प्रयोग भी मिलता है। पुराणों में प्राचीन राजवंशों और वंशानुचारितों का उल्लेख मिलता है। प्रागैतिहासिक के अधिकांश राजवंशों की तालिका इनमे उपलब्ध होती है। पुराण साहित्य को इतिहास माना जाए या नहीं यह आज भी बहुत विवादस्पद है।"[5] किसे इतिहास माने किसे नहीं, विवाद चाहे जो भी हो किंतु बात जब जनजातीय इतिहास या जनजातीय क्षेत्र के इतिहास की आती है तो उनके लोकसाहित्य को अनदेखा नहीं किया जा सकता, क्योंकि लोक साहित्य वह प्रकाश पुंज है जिसके जरिये काल के गर्भ में छिपे युगीन घटनाओ के इतिहास को आलोकित किया जा सकता है। डॉ अनुसुइया अग्रवाल कहती है- "युग समाज और व्यक्ति के इतिहास को सजीवता प्रदान करने वाली सामग्री का प्रभूत संचयन लोकसाहित्य में होता है जिसके सम्यक अध्ययन तथा अनुसंधान से ऐतिहासिक भंडार को समृद्ध किया जा सकता है। युग, समय, समाज, परिस्थिति में आघात-प्रतिघात से विलुप्त एवं विस्मृत हुई घटनाएं लोकानुभूति के द्वारा लोक साहित्य के क्रोड़ में सुरक्षित रहती हैं।"[6] लोक साहित्य किसी भी भाषा या समाज की हो वे अपने भीतर वहाँ की लोकजीवन व लोकसंस्कृति को विशद रूप में संजोए हुए होती है।

बस्तर के प्रमुख जनजातीय लोककथाएं

❖ **भैरमगढ़ के इतिहास से जुड़ी लोककथा:** बस्तर में स्थान विशेष के इतिहास से जुड़ी अनेक लोककथाएं प्रचलित है ऐसे ही एक लोककथा भैरमगढ़ के इतिहास से जुड़ी है कहते है - "दंतेवाड़ा में माता दंतेश्वरी अपने पति भैरवबाबा और उनके सात भाईयों के साथ शंखिनी डंकिनी नदी के संगम के पास रहती थी। एक दिन दंतेश्वरी माता जंगल से कोलियार भाजी तोड़ लायीं। भाजी काटते समय उनकी छोटी उंगली कट गई और खून निकलने लगा। मांई दंतेश्वरी ने उस समय भाजी में ही हाथ पोंछ लिया। बाद में वे भाजी को धोना भूल गई और इस तरह खून से सनी भाजी पक गई। भैरमबाबा जब खाने लगे तो उन्हें स्वाद कुछ अलग लगा। उन्होंने आज बनी स्वादिष्ट कोलियार भाजी का कारण पूछा। माई ने पहले तो नहीं बताया लेकिन भैरमबाबा के बार-बार कारण जानने की जिद के आगे झुक कर उन्हे अपनी गलती बतानी ही पड़ी। भैरमबाबा के कारण जानते ही पति पत्नी में झगड़ा हो गया। भैरमबाबा ने गुस्से में कहा कि आज तुमने मुझे अपना खून पिला दिया क्या पता किसी दिन कोई आदमी ही खिला दोगी? हो सकता है मुझे ही मार दो? और इस तरह मांई पर अपना गुस्सा निकालते हुए भैरमबाबा अपने निवास से निकलकर नीचे कूद पड़े। शंखिनी डंकिनी नदी के संगम पर पत्थर में उभरे भैरमबाबा के पैरों के निशान का संबंध इसी कथा से जुड़ा हुआ बताया जाता है। कहते हैं बाद में भैरमबाबा जिस जगह जा कर रहने लगे उस स्थान का नाम ही भैरमगढ़ पड़ गया।"[7] दंतेवाड़ा में देवी दंतेश्वरी मंदिर के पीछे टापू पर भैरम मंदिर स्थित है। जहां भैरम की प्राचीन प्रतिमाएँ स्थापित है। ये लोककथा भैरमगढ़ और दंतेश्वरी के इतिहास से जुड़ी हुई हैं।

❖ **खेतिहर देवता भीमादेव की लोककथा:** बस्तर की अर्थव्यवस्था का प्रमुख आधार वन और खेती ही रहा है आदिवासी प्राचीन काल से ही सिंचाई के लिए वर्ष पर निर्भर रहते हैं। बस्तर में खेती के देवता भीमादेव के नाम से जाना जाता है। "बस्तर की भतरी जनजाति में मान्यता है कि जब भीमादेव खेती के काम में सक्रिय होता है तब वह हल चलाता है जिससे प्रभावित होकर ही इंद्र पानी बरसता है। बारिश न होने पर इंद्र देवता को प्रसन्न करने के लिए भीमा- भीमिन का विवाह रचाया जाता है। भीमादेव को लेकर बहुत सी लोककथाएं बस्तर अंचल में प्रचलित है। एक मान्यता है कि कभी भीमादेव एक आलसी राजा हुआ करता था जिसकी इसी प्रवृत्ति से रुष्ट होकर इंद्र ने उसके राज्य में पानी बरसना बंद कर दिया। बाद में गलती का एहसास होने पर भीमादेव ने स्वयं हल चलाकर इंद्र को प्रसन्न किया और फिर बारिश होने लगी।"[8] इस लोक कथा के आधार पर तभी से बस्तर क्षेत्र में भीमादेव की पूजा खेतिहर देव के रूप में की जाती है, जो जनजातीय आस्था और विश्वास का प्रतीक हैं। बस्तर अंचल में दन्तेश्वरी माता को मावली माता के रूप में भी पूजा जाता है। बस्तर अंचल के सभी गांवों में मावली माता ग्राम देवी के रूप में पूजी जाती है। नारायण पुर अंचल में मावली माई के अनेक लोककथाएं प्रचलित है।

❖ **मोड़ मावली के इतिहास से सम्बंधित लोककथा:** "बात तब की है जब परलकोट के जमींदार गेंद सिंह के काल में नारायणपुर के पास रावघाट की ओर से अंग्रेजों और मराठों की फौज नारायणपुर की ओर बस्तर राज्य पर आक्रमण के उद्देश्य से आ रही थी। यह देखकर मावली माता ने नारायणपुर ही नहीं अपितु समूचे बस्तर की रक्षा के विषय में सोचते हुए अपनी माया से मेंडकी नामक नदी के पास रास्ते में ही एक बड़ा सा बाजार लगा दिया। उस बाजार में माता ने त्तरह तरह की स्वादिष्ट सामग्री रख दिया। फौजियों ने अपना डेरा मेंडकी नदी के पास डाला और नदी में नहा कर उस बाजार से खाने पीने की चीज लेकर खाने लगे। जितने लोगों ने उस बाजार से खाने-पीने की वस्तुएं लेकर खाई थी, उन सभी की वहीं पर मौत हो गई। एक फौजी पीछे रह गया था। उसने यह सब देखा तो आगे खतरा है लिखकर वहाँ से भाग गया। कहते हैं कि वहीं पास में ही एक चौड़े और सपाट पत्थर पर माता के पाँवो के चिह्न हैं। वहीं पर एक मोड़ है। इसी मोड़ के आधार पर इस स्थान को 'मावली मोड़' कहा जाता है और पाँवो के निशान को मोड़ मावली के नाम से जाना और पूजा जाता है।"[9]

❖ **आड़ मावली की लोककथा :** "कहा जाता है कि एक बार कोई एक मुस्लिम फौजी नारायणपुर होते हुए बस्तर राज्य की ओर आक्रमण के लिए जा रही थी मावली माता ने यह देखा और अपने घर नारायणपुर की रक्षा का उपाय सोची उन्होंने एक केंवटीन की रूप लेकर फौजी के ठीक सामने एक खाली मैदान में डोंगा चलाने लगी। मुस्लिम फौजी ने ऐसी आश्चर्यचकित कर देने वाली घटना कभी देखी ना थी वह सब के सब डर गए डर के मारे पूरी फौज में से किसी को बुखार आ गया तो किसी की सर में पीड़ा होने लगी तब पूरी फौज ने समझ लिया कि यहां से आगे बढ़ाना उचित नहीं होगा कारण इसके आगे जाने पर खतरा हो सकता है। यह सोचकर पूरी फौज वहीं से वापस हो गई।इस तरह माता ने आड़ होकर यानी रक्षक बनाकर नारायणपुर की रक्षा की यही कारण है कि यहां यह देवी आड़ मावली के नाम से विख्यात हुई।"[10]

❖ **मलियारिन माता से जुडी लोककथा:** "लोक विश्वास है कि बस्तर राजघराने की आराध्य देवी मांई दंतेश्वरी राज्य की सुरक्षा के लिए सदैव सजक रहती आई है। ऐसे ही एक घटना है। एक बार रात में वे बड़ेडोंगर स्थित 'भैंसादोंद' पहाड़ी के शिखर पर चढ़कर राज्य के सुरक्षा व्यवस्था का जायजा ले रही थी। तभी 24 कोस दूर उन्हें शत्रु सैनिकों का जमावड़ा दिखा। माता जी को समझते देर न लगी कि बस्तर राज्य पर आक्रमण करने के लिए किसी शत्रु की सेना बड़ेडोंगर की ओर बढ़ रही है। उस सेना ने धमतरी के आसपास अपना शिविर लगा रखा है। दूसरे ही दिन माता जी ने एक मालिन का वेश धारण कर सब्जी की टोकरी लेकर शत्रु पक्ष के शिविर में घूम-घूम कर सस्ते दामों में सब्जी बेचने लगी। जितने लोगों ने भी यह सब्जी खाई वे सब के सब महामारी के शिकार हो गए। कुछ लोग बेहोश हो गए तो कुछ की मृत्यु हो गई। एक साथ इतने लोगों को महामारी और मृत्यु का शिकार होते देख किसी भावी अनिष्ट की आशंका से दुश्मन की बाकी बची फौज वहीं से वापस भाग गए। इस तरह माताजी ने युद्ध की विभीषिका से राज्य की रक्षा की। माता जब बड़े डोंगर वापस हुई तो वह मालिन के ही वेश में थी। माता ने नगर वासियों को पूरी घटना की जानकारी दी और अपना मालिन रूप वहीं छोड़कर अंतर्धान हो गई। तब से यहाँ मांई दंतेश्वरी की पूजा 'मलियारिन माता' के रूप में की जाती है।"[11] लोक विश्वास है कि माई दन्तेश्वरी उन्हें अनिष्ट से बचाने के लिए सदैव उनके साथ रहती है।

❖ **नरसिंग नाथ की लोक कथा** - "कहते हैं कि एक बार संपूर्ण बस्तर राज्य में महामारी और प्राकृतिक प्रकोप फैल गया था। उसे महामारी से प्रजा ही नहीं अपितु पशु पक्षी और फसने भी प्रभावित हो गई थी। तब राजा ने राज्य भर के प्रमुख आँगा देवताओं को राज दरबार में आमंत्रित किया। राजा की आमंत्रण पर सारे प्रमुख देवता राज दरबार में उपस्थित हुए। प्राकृतिक आपदा के कारण विचलित राजा ने कहा कि पूरे राज्य में घोर विपत्ति छाई हुई है और इतने शक्तिशाली देवताओं के रहते हुए भी प्रजा-जन को देव-गण की कोई सहायता नहीं मिल रही है। ऐसे में इन सभी आँगाओं को नदी में बहा दिया जाए। राजाज्ञा से सभी आँगा को इंद्रावती नदी में बहा दिया गया। बाकी सभी आँगा तो नदी की धार में बहने लगे किंतु नरसिंग नाथ का आँगा तेज धार में बहने की बजाय धार के विपरीत दिशा में ऊपर की ओर चढ़ने लगा। नरसिंह नाथ के इस चमत्कार से राजा अत्यंत प्रभावित हुए और उन्होंने नरसिंह नाथ को राजकीय सम्मान के साथ बस्तर की आराध्य मांई दंतेश्वरी का अंगरक्षक घोषित किया। तब से प्रत्येक पर्व या त्योहार में बस्तर की आराध्य माँ दंतेश्वरी के प्रमुख अंगरक्षक के रूप में सम्मानपूर्वक नरसिंग नाथ की पूजा अर्चना की जाती है। किसी गांव में जब कोई भी दैवीय प्रकोप होता है या देवी-देवता संबंधी कोई विवाद होता है, तो निपटारे के लिए ग्रामीण नरसिंगनाथ की ही शरण में जाते हैं। जब गांव बनाना होता है तब भी नरसिंह नाथ को सा सम्मान अपने गांव में ले जाया जाता है। लोग विश्वास है कि नरसिंहनाथ अवांछित देवी देवताओं के कोप से मुक्ति दिलाते हैं। चूँकि नरसिंहनाथ रजवाड़ी देवता हैं इसलिए इन्हें अन्यत्र ले जाने के लिए पुलिस-थाने से अनुमति लेनी पड़ती है। यदि मामला गंभीर या विवादास्पद हो, तो साथ में बाकायदा पुलिस बल भी भेजा जाता है।"[12]

निश्चित ही उपर्युक्त लोककथाएं आदिवासी संस्कृति, धार्मिक विश्वास और इतिहास को जानने का महत्वपूर्ण स्रोत हो सकती है। लोककथाओं में ऐतिहासिकता के सम्बंध में वेरियर एल्विन का मत है कि "लोक कथाएं प्रतीकात्मक शैली में प्राप्त विकृत इतिहास के अंश कहीं जा सकती हैं।"[13]

लोककथाओं के ऐतिहासिक तत्व पर डॉ मृणाल ओझा कहती हैं - "इतिहास का अर्थ सीमित नहीं किया जा सकता है। निश्चित ही वह विशद और व्यापक है। विश्व के विभिन्न क्षेत्रों एवं जीवन के विविध आयामों के इतिहास अलग-अलग होते हैं। काल के पहिए में न जाने कितने अवशेष दबाकर चूर-चूर हो गए हैं, जो की इतिहास के क्षेत्र में अनेक प्रयासों की बावजूद अप्राप्य हैं। फिर भी ऐतिहासिक सत्यों को ये लोककथाएं अपने उर में संजोयी हुई हैं, जो हमें अतीत का सिर्फ परिचय ही नहीं दती, अपितु सप्रमाण सूचना भी देती हैं। विज्ञान का हर अग्रसित पग उसकी पिछली उपलब्धि को, प्रमाणों को, अधूरा सिद्ध कर देता है। इतिहास और लोक कथाओं के संदर्भ में अनेक विद्वान इस को स्वीकारते हैं कि अनेक प्रांतो का इतिहास इन लोक कथाओं के सहारे भी लिख गए हैं। ऐतिहासिक शुष्कता भी इन कथाओं का परिवेश पाकर सरस बन जाती हैं।"[14]

ऐतिहासिक दृष्टि से भी बस्तर के आदिवासियों ने अंग्रेज मुगलों और मराठों से अपने अधिकारों और संस्कृति की रक्षा के लिए संघर्ष किये है। परलकोट विद्रोह, भूमकाल विद्रोह, बस्तर के मुक्ति संग्राम जैसे ऐतिहासिक घटनाओं में बस्तर के आदिवासियों ने अपनी धार्मिक मान्यता, अपनी लोकसंस्कृति के संरक्षण के लिए बाहरी आक्रमणकारियों के खिलाफ लड़े है। इसलिए इनके लोक कथाओं में इनके ऐतिहासिक, समाजिक और राजनीतिक संघर्ष चित्रित है, जो आस्था और लोकविश्वास के रूप में मौजूद है। जो इनमे सामूहिकता की भावना का बल देता है। आदिवासी लोककथाओं में क्षेत्रीय इतिहास निहित हैं। इन किवदन्तियों का बस्तर के सामाजिक, सांस्कृतिक जीवन, दर्शन और धार्मिक आस्था के ऐतिहासिक अन्वेषण में विशेष महत्व है।

निष्कर्ष:

बस्तर के आदिवासी न केवल जल जंगल जमीन के लिये ही संघर्षरत हैं अपितु भूमण्डलीकरण और बाजारवादी के इस दौर में अपनी भाषा और संस्कृति को अक्षुण्ण बनाए रखने के लिये भी जद्दोजहद कर रही है। वाचिक परम्परा में विद्यमान आदिवासी लोककथाएं न केवल उनके मनोरंजन और मान्यताओं को बल देती है अपितु उनके जीवन संघर्ष, जीवन दर्शन, पारंपरिक ज्ञान, भाषा बोली और लोक मान्यताओं, का संरक्षण भी करती हैं। आदिवासी लोककथाएं उनकी इतिहास और जीवन दर्शन को जानने में निश्चित ही ऐतिहासिक स्रोत के रूप में अनिवार्य उपकरण हैं, आदिवासी जीवन दर्शन और उनके लोकसाहित्य जो उनके जीवन का अभिन्न हिस्सा है को समझे बिना उनके इतिहास लिखना न्याय संगत नही होगा।

सन्दर्भ

1. अग्रवाल डॉक्टर अनुसुइया, छत्तीसगढ़ी लोक साहित्य अर्थ और व्याप्ति, शताक्षी प्रकाशन रायपुर, पृष्ठ-16
2. अग्रवाल डॉक्टर अनुसुइया, छत्तीसगढ़ी लोक साहित्य अर्थ और व्याप्ति, शताक्षी प्रकाशन रायपुर, पृष्ठ-18
3. अग्रवाल डॉक्टर अनुसुइया, छत्तीसगढ़ी लोक साहित्य अर्थ और व्याप्ति, शताक्षी प्रकाशन रायपुर, पृष्ठ-72
4. अग्रवाल डॉक्टर अनुसुइया, छत्तीसगढ़ी लोक साहित्य अर्थ और व्याप्ति, शताक्षी प्रकाशन रायपुर, पृष्ठ-30
5. ओझा डॉ मृणाल, लोक कथा में लोक और लालित्य, शताक्षी प्रकाशन रायपुर पृष्ठ 258
6. अग्रवाल डॉक्टर अनुसुइया, छत्तीसगढ़ी लोक साहित्य अर्थ और व्याप्ति, शताक्षी प्रकाशन रायपुर, पृष्ठ-140
7. प्रसाद, राजीव रंजन, बस्तरनामा, यश पब्लिकेशन दिल्ली, पृष्ठ-224
8. प्रसाद, राजीव रंजन, बस्तरनामा, यश पब्लिकेशन दिल्ली, पृष्ठ 227

9. वैष्णव हरिहर, छत्तीसगढ़ के लोक एवं मिथक कथाएँ, सरस्वती प्रकाशन भिलाई, पृष्ठ 211
10. वैष्णव हरिहर, छत्तीसगढ़ के लोक एवं मिथक कथाएँ, सरस्वती प्रकाशन भिलाई, पृष्ठ 209
11. वैष्णव हरिहर, छत्तीसगढ़ के लोक एवं मिथक कथाएँ, सरस्वती प्रकाशन भिलाई, पृष्ठ 177
12. वैष्णव हरिहर, छत्तीसगढ़ के लोक एवं मिथक कथाएँ, सरस्वती प्रकाशन भिलाई, पृष्ठ 185
13. वेरियर एल्विन, मिथ्स ऑफ मिडिल इंडिया, पृष्ठ 11
14. डॉ मृणालिका ओझा, लोककथा में लोक और लालित्य (सन्दर्भ: छत्तीसगढ़), पृष्ट 258